जनवरी 2022

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

ये त्रिमंदिर इसलिए हैं कि जगत् सीमंधर स्वामी को पहचान सके।
जगह-जगह सीमंधर स्वामी के त्रिमंदिर बनेंगे तब दुनिया का नक्शा कुछ और ही होगा!

जूनागढ़ त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव - ता. 9 जनवरी 2022

अडालज : परम पूज्य दादा भगवान का 114वाँ जन्मजयंती महोत्सव : ता. 17 से 21 नवम्बर

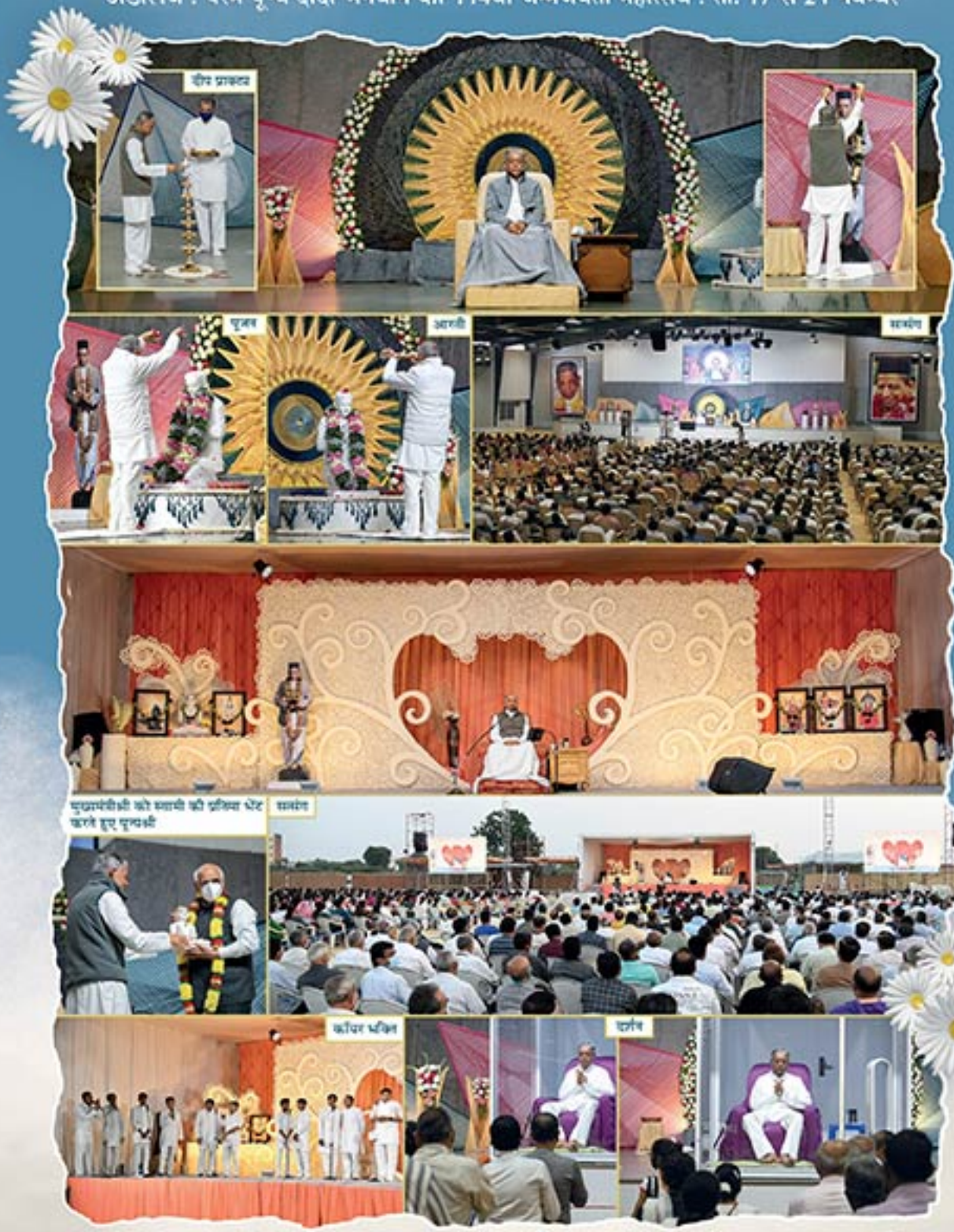

वर्ष : 17 अंक : 3
अखंड क्रमांक : 195
जनवरी 2022
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2022
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 650 रुपये
यू.एस.ए. : 60 डॉलर
यू.के. : 45 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

सीमंधर स्वामी का जगत् कल्याणी मिशन

संपादकीय

अनंत चौबीसी आई और गई फिर भी यह जीव नहीं बूझा, भटकन का अंत नहीं आया! तो अब, इस पंचम *आरे* (कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा) में मुक्ति का उपाय क्या है? मुक्तिपिपासु के पुण्य से कालक्रम में मुक्ति के पथ पर ले जाने वाले ज्ञानी या सत् पुरुष प्रकट होकर अनेकों के कल्याण के निमित्त बनते हैं। इस काल के अक्रम विज्ञानी परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) को भरत क्षेत्र के मनुष्यों के मुक्तिदाता, महाविदेह क्षेत्र में विहरमान वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी की पहचान हुई और अनेकों को उनका संधान करवा दिया।

दादाश्री कहते हैं कि, ''हमारी यही भावना है कि भले एक जन्म की देर हो तो हर्ज नहीं लेकिन यह 'अक्रम विज्ञान' जगत् में फैलना चाहिए।'' मुझे जो सुख मिला है, वैसा सुख जगत् को हो। जगत् ऐसी स्थिति में न रहे। इस जगत् के लोग सच्चे ज्ञान को प्राप्त करे, सुख-शांति को प्राप्त करे और कुछ लोग मोक्ष प्राप्त करे। यानी जगत् कल्याण की एक मात्र भावना की, कि जगत् का कल्याण हो! इस युग के इस भरतक्षेत्र के मनुष्य श्री सीमंधर स्वामी का संधान करके उनके चरणों में स्थान प्राप्त करे, इतना ही प्रयोजन है।

श्री सीमंधर स्वामी की भजना से ही जगत् में बदलाव होगा। कोई भी भेदभाव रहित, पंथ-संप्रदाय से मुक्त, ऐसे श्री सीमंधर स्वामी के निष्पक्षपाती त्रिमंदिरों से हिन्दुस्तान की प्रजा का आत्यंतिक कल्याण होगा।

परम पूज्य दादाश्री द्वारा स्वरूप ज्ञान प्राप्त करके अपना तो कल्याण हुआ, अब इस जन्म में जो भी संयोग प्राप्त हों उनमें ये मन-वचन-काया का उपयोग सीमंधर स्वामी के मिशन हेतु ही करना है, यही निश्चय होना चाहिए। यह कल्याण का मिशन स्वामी का है और यह मिशन पूरा होकर ही रहेगा। क्योंकि इसके पीछे श्री सीमंधर स्वामी प्रभु के शासन देवी-देवता कार्य कर रहे हैं। जगत् का कल्याण होना ही चाहिए और वह कैसे नहीं होगा? अपने सिर पर श्री सीमंधर स्वामी जैसे वर्तमान तीर्थंकर हैं और अक्रम मार्गी ज्ञानी पुरुष हैं, अत: ऐसा होना ही चाहिए।

प्रस्तुत अंक में, जगत् कल्याण के लिए ज्ञानियों की भावना कैसी होती है, उसकी झांकी देखने मिलती है। दादाश्री लघुत्तमभाव सहित कहते हैं कि, 'हम तो इसमें निमित्त मात्र हैं, बाकी यह तो सीमंधर स्वामी का जगत् कल्याण मिशन है।' इस मिशन में हम निमित्तभाव से योगदान दें, यही अपनी भावना होनी चाहिए। जगत् कल्याण के इस मिशन में हम सभी महात्मा प्योर होकर जुड जाएँ, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

सीमंधर स्वामी का जगत् कल्याणी मिशन

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

जगत् कल्याण के राग से, करे कल्याण

प्रश्नकर्ता : आप वीतरागी का लोकसंपर्क से क्या संबंध?

दादाश्री : वीतरागी भाव, वीतरागी को और जनसंपर्क को कोई लेना-देना नहीं होता! इस काल में संपूर्ण वीतराग नहीं होते हैं। हम वीतराग हैं परंतु संपूर्ण नहीं हैं। हम जगत् के तमाम जीवों के साथ वीतराग हैं, सिर्फ हमारे जगत् कल्याण करने के कर्म के प्रति हमें राग रहता है। जगत् कल्याण करने की खटपट के लिए हमें थोड़ा राग रह गया है। वह राग भी कर्म खपाने जितना ही है।

कर्म खपाने जितना थोड़ा राग रह गया है, वह भी जगत् कल्याण करने की खटपट के लिए और वह नुकसानदेह नहीं है न! इसे भी राग कहते हैं। हमारी गर्ज़ थी इसीलिए वहाँ से उठकर यहाँ आए!

आप जिनसे पूछ रहे हैं वे इस समय (पूर्ण) वीतराग नहीं हैं! अभी तो हम खटपटिये वीतराग हैं। खटपटिया यानी कैसे इस जगत् का कल्याण हो, और कल्याण हेतु खटपट करते हैं। वीतरागी तो सिर्फ दर्शन दिया करते हैं। अन्य खटपट या कुछ नहीं करते हैं, ज़रा सी भी खटपट नहीं करते हैं। खटपटिया का मतलब ये खटपट करने को रह गए हैं हम। इसलिए हम खटपटिया वीतराग कहलाते हैं। सिर्फ इतनी ही इच्छा है, अन्य कोई इच्छा नहीं है। 'किस तरह से लोगों को शांति प्राप्त हो' इसीलिए यह बीड़ा उठाया है। और इसलिए तो रोज़ 11 घंटे यह सत्संग करता हूँ।

वीतरागी खटपट द्वारा कल्याण

हम यह खटपट करते हैं वह, 'इधर आओ न, आपको मोक्ष देंगे।'

हमें यह सारी खटपट इसीलिए करनी पड़ती है न! खुद को कुछ भी नहीं चाहिए, उसी को कहते हैं वीतराग! खटपट क्या है? तो कहते हैं कि सामने वाले को मेरे जैसी कुछ (प्राप्ति) हो जाए, वही भावना।

महावीर भगवान खटपटिया वीतराग नहीं थे। मैं तो आपको बुलाता हूँ कि 'आना, आपके सर्वस्व दु:ख चले जाएँगे।' महावीर भगवान को ऐसा कुछ नहीं था। संपूर्ण वीतराग! कोई दखल ही नहीं न! दखल नहीं, खटपट नहीं। जिसे इस वर्ल्ड में कुछ भी नहीं चाहिए।

मुझे वर्ल्ड की कोई भी चीज़ नहीं चाहिए। शुद्ध सोना दिया जाए फिर भी नहीं चाहिए। स्त्रियों का विचार तक मुझे नहीं आता। जो पुरुष बंधन मुक्त हो चुके हैं, उन्हें फिर क्या चाहिए? लेकिन सिर्फ यही एक चीज़ कि जगत् कल्याण होना चाहिए और होगा ही और इस जगत् का नया ही रूप होगा! नया ही तरीका, नया ही रूप!

अब वीतराग ऐसा नहीं कहते थे! हम

तो खटपटिया हैं इसलिए ऐसा कहते हैं कि, 'भाई, आगे खाई में लुढ़क जाएगा।' अब वीतराग हमें कहते हैं कि, 'आपको यह क्या पीड़ा है?' तो हमें ऐसा होता है कि, 'अरे, ये लुढ़क गए तो फिर इनका कब ठिकाना पड़ेगा?' हमारा भाव ही ऐसा है, इच्छा ही ऐसी हो गई है कि कोई लुढ़के नहीं और इसमें से कुछ हल निकाले। हमें मोक्षमार्ग मिल गया है तो हम तुम्हें साथ में ले जाएँगे। तुम्हारे साथ आधा घंटा बैठेंगे लेकिन फिर तुम्हें हम वापस साथ लेकर जाएँगे।

भावना मात्र जगत् कल्याण की ही

प्रश्नकर्ता : लेकिन वीतरागी जो जनसंपर्क करते हैं, क्या वे अपने कर्म खपाने के लिए हैं?

दादाश्री : खुद का हिसाब पूरा करने के लिए, दूसरों के लिए नहीं। उनकी और कोई भावना नहीं है। हमारी भावना है कि लोगों का कल्याण हो! जैसा हमारा कल्याण हुआ ऐसा सभी का कल्याण हो, ऐसी हमारी भावना रहती है। वीतरागों को ऐसा नहीं रहता, बिल्कुल भावना ही नहीं, संपूर्ण वीतराग! और हमारी तो यह एक तरह की भावना है। इसीलिए सुबह जल्दी उठकर बैठ जाते हैं, शांति से। स्कूल (सत्संग) शुरू कर देते हैं न, जो रात के साढ़े ग्यारह बजे तक होता है न। अर्थात् ऐसी हमारी भावना है। क्योंकि हमारे जैसा सुख प्रत्येक को प्राप्त हो! इतने सारे दुःख किसलिए? दुःख है ही नहीं और बिना वजह दुःख भुगत रहे हैं। यह नासमझी निकल जाए तो दुःख चले जाएँगे। अब नासमझी कैसे निकले? कहने से नहीं निकलती, दिखाने से निकलती है। आप करके दिखाएँ तो निकले!! इसलिए हम तो करके दिखाते हैं। इसे मूर्त स्वरूप कहते हैं। ये श्रद्धा की मूर्ति कहे जाते हैं।

पूरा जगत् कैसे वीतरागता को समझे, कैसे वीतराग मार्ग को प्राप्त करे, भले ही मोक्ष प्राप्ति न हो पाए, लेकिन वीतराग मार्ग को प्राप्त करो। एक मील चलो, लेकिन वीतराग मार्ग पर चलो। जिस धर्म को पकड़ा हो, उस धर्म के जितने वीतराग मील हों, उसमें एक मील तो एक मील लेकिन वीतराग मार्ग में आगे बढ़ो!

कारुण्यता से कल्याण का हेतु

पूरी दुनिया जैसे शक्करकंद को भट्ठी में भूनते हैं, ऐसे भुन रही है। फॉरेन वाले भी भुन रहे हैं और यहाँ वाले भी भुन रहे हैं। ये लोग चारों तरफ से जल रहे हैं। तू अहमदाबाद में, मुंबई में मोहराजा का बल, देखो तो सही! करोड़ों रुपये होने के बावजूद जिस तरह मछली तड़पती है, उस तरह लोग तड़प रहे हैं! 'शक्करकंद भुन रहे हैं', ऐसा किसी से कहा तब वह कहने लगा, 'दादा, कहते हैं शक्करकंद भुन रहे हैं, लेकिन अब तो जलने भी लगे हैं। जो पानी था, वह खत्म हो गया और अब शक्करकंद जलने लगे हैं!' यानी ऐसी दशा है! अपने सत्संग का हेतु क्या है? जगत् कल्याण करने का हेतु है। यह भावना कोई बेकार नहीं जाती।

हम कहते थे कि 'बड़ के नीचे, पेड़ के नीचे बैठ के हम उपदेश देंगे। अगर किसी के घर जाएँगे, तो उनके घर का कल्याण हो जाएगा।'

लोग इस भ्रम में से कैसे निकले? कितना भ्रम होगा? अतः पूरे दिन यही कारुण्यता रहती है और तभी वह उलझन में से निकलेगा तो इस ज्ञान को प्राप्त करेगा और तब जाकर सही राह पर आएगा। इसलिए यह उपाय है। तुझे इसमें कोई आपत्ति लगती है?

समझो तीर्थंकरों की मूल बात

प्रश्नकर्ता : नहीं, दादा लेकिन जब भी देखता हूँ, जहाँ-जहाँ देखता हूँ वहाँ निराशा दिखाई देती है।

दादाश्री : जहाँ देखो वहाँ निराशा। लेकिन अब ज्ञानियों के निमित्त से इस जगत् का कल्याण होगा। जगत् में जो विचार फैलेंगे, धर्म फैलेगा, उससे ये सभी विद्रोही भावनाएँ टूट जाएँगी, उनके विचारों से। जो भी विद्रोही भावनाएँ उत्पन्न हुई हैं वे सभी टूट-फूटकर फ्रेक्चर हो जाएँगी। उसी का यह स्कूल (सत्संग) चल रहा है!

प्रश्नकर्ता : आप जो भी कह रहे हैं वैसा हो जाए तो कितना अच्छा होगा!

दादाश्री : मूलत: द्वेष में से ही उत्पन्न हुआ है यह सब। और उससे भी आगे जाएँ तो बैर में से उत्पन्न हुआ है। अत: मैत्री हो जाएगी तब काम होगा, वर्ना जब तक बैर रहेगा, तब तक बाँधेगा। चौबीस तीर्थंकरों की इतनी सी, यह एक ही बात अगर समझ जाए तो जगत् का कल्याण हो जाएगा। यही एक बात, चौबीस तीर्थंकरों की कि, 'वीतद्वेष बनो!'

वैज्ञानिक तरीका तीर्थंकरों का

तीर्थंकरों का तरीका बहुत ही वैज्ञानिक होता है। जब मेरा इतना वैज्ञानिक है तो उनका तरीका कितना अधिक वैज्ञानिक होगा, कितना अच्छा तरीका होगा! फेल हो गए हैं, उनका तरीका यदि इतना अधिक वैज्ञानिक है तो जो पास हो चुके हैं, उनका कितना वैज्ञानिक होगा? आपको क्या लगता है? मेरे द्वारा एक ही घंटे में इंसान में इतना अधिक परिवर्तन हो जाता है, तो वे तो कितने सयाने होंगे! और यह उन्हीं की बात है। इसमें मेरा किसी भी प्रकार का माल नहीं है। यह तो टेपरेकॉर्ड बजती रहती है और मैं सुनता रहता हूँ।

दैदीप्यमान होगा शासन, भगवान महावीर का

यह सब तो अभी और अठारह हज़ार सालों तक चलता रहेगा। बाद में तो पुस्तकें नहीं रहेंगी, मंदिर नहीं रहेंगे। धर्म का कुछ अंश भी नहीं रहेगा। तब तक कुछ साधन तो चाहिए न? तब तक धर्म चलता रहेगा।

वीतराग का शासन! भगवान महावीर का शासन बहुत दैदीप्यामान होगा! अभी तक बहुत निंदा हुई, अब दैदीप्यामान होगा। बहुत ज़बरदस्त दैदीप्यामान होगा। और सभी धर्म दैदीप्यामान होंगे! शासन भगवान महावीर का है और हम तो उस शासन के कलश कहलाते हैं। कलश नहीं चढ़ाते?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो फिर दैदीप्यामान होगा और अपनी ज़िम्मेदारी नहीं! आपको तो भीतर यही भावना रखनी है कि जगत् का कल्याण हो। वह भावना सच्चे दिल की है! जगत् कल्याण तो होगा ही, उसमें दो मत नहीं है। इसमें कुदरत ही हेल्प करेगी। और कोई हेल्प नहीं कर सकता। वह ऐसी हेल्प करेगी जोरदार! जगत् प्राप्त करेगा (आत्म कल्याण), वह निश्चित है! यह यों ही नहीं जाएगा। ऐसा 'विज्ञान' जो प्रकट हुआ है, वह यों ही लुप्त नहीं हो जाएगा।

खुद (स्वयं) की गर्ज़ से जगत् कल्याण

यानी यहाँ पर अलग ही प्रकार का है, यह दुकान नहीं है। फिर भी लोग तो इसे दुकान ही कहेंगे। क्योंकि 'बाकी सभी ने दुकान खोली वैसी दुकान आपने भी किसलिए खोली? आपको क्या गर्ज़ है?' मुझे भी वैसी गर्ज़ तो है न कि, 'मैंने

जो सुख पाया, वह आप भी पाओ!' क्योंकि लोग मछलियाँ पानी से बाहर छटपटाती हैं वैसे छटपटा रहे हैं। इसलिए हमें ये सब घूमना पड़ता है। बहुत लोगों ने शांति का मार्ग प्राप्त कर लिया है।

प्रश्नकर्ता : यानी यह गर्ज़ नहीं है, परंतु इन सभी जीवों का कल्याण हो, ऐसी भावना होती है न!

दादाश्री : कल्याण हो तो अच्छा, ऐसी भावना होती है। इस वर्ल्ड में तीर्थंकरों और ज्ञानियों के सिवाय किसी ने जगत् कल्याण की भावना नहीं की है। अपने ही पेट का ठिकाना नहीं पड़ा हो, वहाँ पर लोगों के लिए कहाँ विचार करें? सभी लोगों ने भावना क्या की है? ऊँचा पद ढूँढते रहे हैं! साधु हो तो 'मुझे उपाध्याय कब बनाएँगे?' और उपाध्याय हो तो 'मुझे आचार्य कब बनाएँगे', ऐसी भावना सभी की होती है। जबकि इस ओर, लोगों में कालाबाज़ार करने की भावना है! कलेक्टर हो तो 'मुझे कमिश्नर कब बनाएँगे', ऐसी भावना होती है! जगत् कल्याण की तो किसी को भी पड़ी नहीं है।

हम जो एक जन्म या दो जन्म की बात कर रहे हैं न, उस समय शायद किसी में यह भाव आ भी सकता है, कल्याण का। लेकिन वह एक-दो जन्मों के लिए ही। अत: क्या है कि तीर्थंकरों को ऐसा भाव हुआ था कि 'मुझे जो सुख मिला है, वह दूसरे भी पाएँ।' और सिर्फ यही एक चार्ज भाव था लेकिन सभी को वह भाव नहीं होता। बाकी सभी की तो साधारण इच्छा रहती है कि जगत् का कल्याण हो। 'जगत् का कल्याण करना', ऐसा कोई उनका मूल भाव नहीं होता। कुछ ही लोगों को होता है ऐसा। चारों तरफ से ऐसे संयोग हों तब ऐसा होता है। सभी को नहीं होता।

ज्ञानी करे कल्याण, निमित्त भाव से

हम इस काल में नकद मोक्ष दे सकते हैं। जिससे यहीं मोक्ष बरतेगा। हम मोक्षदाता हैं, मोक्ष के लाइसेन्सदार हैं। जगत् कल्याण के निमित्त हैं हम। हम उसके कर्ता नहीं हैं। जो मुझसे मिला है, उसका कल्याण हो जाएगा, लेकिन मिलना चाहिए। यह आपको मिला है, संयोग मिला है। जब आपका पुण्य उदय में आता है तब संयोग मिलता है। और मुझे भी मिला है, मुझसे इस जगत् का कल्याण होगा इसलिए मुझे मिला है यह। मैं भी निमित्त हूँ न! मैं उनसे कहता हूँ न, अर्थात् यह सब तो निमित्त है।

उदय आया है लेकिन जगत् कल्याण के लिए सभी की यह भावना है। वीतरागी गोत्र है न, गोत्र एक ही है न! महावीर स्वामी का गोत्र है न! लोग मुझसे कहते हैं, 'यह आपका धर्म अब चलेगा यहाँ पर।' मैंने कहा, 'नहीं भाई, भगवान का।' आने वाले साढ़े अठारह हज़ार साल तक भगवान का शासन है। हम तो इस शासन के श्रृंगार की तरह हैं। लोग कहेंगे, कि श्रृंगार बन गए! लेकिन हम तो निमित्त हैं इसमें, कोई कर्ता नहीं है। किसी चीज़ के हम कर्ता नहीं हैं। करने की शक्ति हम में है ही नहीं। करने की शक्ति संपूर्ण रूप से खत्म हो गई है। जब तक शक्ति है तब तक *पुद्गल* (अहंकार) परिणति रहती है। उससे *पुद्गल* परिणाम उत्पन्न होते हैं।

हम अपने वीतरागी सुख में बरतते हैं। और इन सभी का काम, वह जितना भी हो उतना हम निमित्त भाव से पूरा करते हैं। यह आपका और हमारा कुछ पूर्व जन्म का, कितने ही जन्म का ऋणानुबंध होगा तब मिले हैं हम। 'हम' जगत् कल्याण के स्वामी नहीं हैं, निमित्त हैं। जो पुण्यशाली होते हैं, वे तो घर बैठे लाभ ले जाते

हैं! पुण्यशालियों का फल, यह 'अक्रम मार्ग' है! वर्ना अक्रम तो होता होगा? यदि ज्ञानी पुरुष के दर्शन हो गए न, तो कल्याण हो गया!

ज्ञानी के सानिध्य में बरते समाधि

प्रश्नकर्ता : दादा के पास बैठने से शांति हो जाती है और संसार भाव छूट जाता है, ऐसा कैसे होता है? वह शक्ति है न, दादा की!

दादाश्री : दादा की शक्ति नहीं है वह। बर्फ के पास बैठने से स्वभाव से ही ठंडक लगती है। वह कोई बर्फ की शक्ति नहीं है। वर्ना, बर्फ भी शोर मचाता रहता कि, 'मेरी वजह से, मैंने आपको कितना ठंडा किया है!' अरे, तू क्या ठंडा करता! तेरा स्वभाव है वह तो! अत: हमारे स्वभाव से होता है। हम में एक भी विषय का परमाणु नहीं है, एक भी ममता का परमाणु नहीं है, तो फिर जहाँ ममता ही न हो, अहंकार न हो वहाँ पर और क्या होगा?

हम में पौद्गलिक परिणति एक क्षण के लिए भी उत्पन्न नहीं होती। यह वेश तो ऐसा ही है लेकिन पौद्गलिक परिणति नहीं होती। हमें उसके विचार तक नहीं आते, ऐसा कुछ पूर्व का लेकर आए हैं। इस जन्म में ऐसा कोई पुरुषार्थ नहीं है, लेकिन ऐसा कुछ लेकर आए हैं, इसलिए प्रकट हुआ।

मालिकी रहित, कल्याणकारी वाणी

प्रश्नकर्ता : जगत् कल्याण की भावना कौन करता है?

दादाश्री : यह प्रज्ञाशक्ति के कारण है। वास्तव में जगत् कल्याण की भावना करने का प्रज्ञा का काम नहीं है, लेकिन एकाध-दो जन्म बाकी रहते हैं, उतना प्रज्ञाशक्ति के साथ एक सहायक शक्ति काम करती है, हालांकि दोनों एक जैसे ही हैं लगभग।

मैं आत्मा होकर, पुरुष होकर बोल रहा हूँ और पुरुषार्थ करने निकला हूँ। किस तरह से हिन्दुस्तान और फॉरेन पर असर हो, उसी हेतु से मेरा यह कार्य कर रहा हूँ।

प्रश्नकर्ता : तो क्या आत्मा को जगत् कल्याण की भावना होती है?

दादाश्री : आत्मा को ऐसी भावना ही नहीं होती न! यह मैं जिसकी 356 डिग्री कह रहा हूँ न, वह 'मैं' 356 डिग्री वाला, उसे होता है ऐसा सब।

प्रश्नकर्ता : वह 356 डिग्री वाला कौन है?

दादाश्री : वही ये ज्ञानी पुरुष हैं न!

प्रश्नकर्ता : तो उनकी यह वाणी है?

दादाश्री : नहीं! यह वाणी तो उनकी भी नहीं है। वे तो मालिकीपन मान बैठे थे। अब मालिकीपन छोड़ दिया है, फिर भी 356 डिग्री है। क्योंकि उनको जगत् कल्याण करने का भाव है।

प्रश्नकर्ता : उस भाव के कारण यह कल्याण हो, ऐसी वाणी निकलती है?

दादाश्री : नहीं! मालिकीपन छोड़ दिया है इसलिए ऐसी वाणी निकलती है। कल्याण करने में हर्ज नहीं है लेकिन मालिकीपन छोड़ दो तो आपका भाव पूरा हो जाएगा। वह तो, भगवान महावीर का भी मालिकीपन छूट गया था, फिर देशना निकली और अपने आप निकलती रही।

प्रश्नकर्ता : आपकी जो वाणी निकलती है देशना के रूप में, वह पहले की किसी भाव के कारण है?

दादाश्री : पहले पुरुषार्थ किया था। पहले भावना की थी कि वाणी ऐसी भूल वाली नहीं होनी चाहिए, भूल रहित वाणी होनी चाहिए। तो अब, उसका फल आया है। इसलिए हम उससे मुक्त हो गए।

प्रश्नकर्ता : अभी एक-दो जन्म बाकी हैं आपके, तो इससे भी उच्च प्रकार के कल्याण के निमित्त होने के लिए कुछ नई वाणी होती होगी न भीतर?

दादाश्री : यही तो नई वाणी है, इससे उच्चतम वाणी नहीं होती है। हमें भी यह वाणी पढ़नी पड़ती है।

स्याद्वाद वाणी से होगा कल्याण

ये सब जो कुछ भी बोलते हैं, जितना भी बोलते हैं, वह सब खुला अहंकार है। ज्ञानी पुरुष भी जब सिर्फ, स्याद्वाद बोलते हैं, उस समय उनका अहंकार नहीं होता है लेकिन वे अन्य जो कुछ भी बोलते हैं न, तो उनका भी अहंकार ही निकलता है। उस निकलते हुए अहंकार को डिस्चार्ज अहंकार कहा है। जो कुछ भी बोलते हैं, वह सब अहंकार ही है। बोलने की ज़रूरत ना होने पर भी बोल देते हैं। नहीं?

प्रश्नकर्ता : दूसरों का कल्याण होता है इसमें!

दादाश्री : वह ठीक है। दूसरों का कल्याण हो, उसमें हर्ज नहीं है लेकिन जहाँ कल्याण न होना हो और अन्य बात हो न, वहाँ भी बोल देते हैं, 'नहीं, ऐसा करना है, आप नहीं जानते।' जितना भी बोलते हैं, वह सब अहंकार है।

महावीर भगवान की स्याद्वाद वाणी थी और ज्ञानी पुरुष की स्याद्वाद वाणी, स्याद्वाद अर्थात् क्या? कि सभी सुनते हैं लेकिन किसी को ऐसा नहीं लगता कि हमारे विरुद्ध बोल रहे हैं। मुस्लिम हों, दूसरे हों, सभी को पसंद आए, वह स्याद्वाद कहलाता है। निराग्रही वाणी और सर्व सापेक्ष को लेकर चलने वाली! भगवान की वह वाणी कितनी अच्छी है!

स्व-कल्याणी हो, तो पर-कल्याण कर सकते हैं

प्रश्नकर्ता : स्व-कल्याण पहले है कि पर-कल्याण पहले है?

दादाश्री : जो स्व-कल्याण करता है न, वही पर-कल्याण कर सकता है। वर्ना, पराये का कल्याण कोई इंसान नहीं कर सकता। खुद का कल्याण किया हो तभी दूसरों का कल्याण होता है। और जो पराये का कल्याण करने निकले हैं न वह तो सिर्फ इगोइज़म (अहंकार)है। 'मैं कुछ करता हूँ।' संडास जाने की तो शक्ति नहीं है। इस वर्ल्ड में ऐसा कोई भी इंसान नहीं हुआ है, जिसमें संडास जाने की स्वतंत्र शक्ति हो!

अर्थात् पहले खुद का कल्याण हो, तब दूसरों का कल्याण हो सकता है। मैं बीड़ी पीना छोड़ दूँ और फिर कहूँ कि, 'बीड़ियाँ नहीं पीनी चाहिए', तो उसे असर होगा। मुझ में क्रोध-मान-माया-लोभ हों और मैं कहूँ, 'सभी क्रोध-मान-माया-लोभ निकाल दो!' देखो, ये जगत् का कल्याण करने निकले हैं! जगत् का कल्याण कौन कर सकता है? जिनका खुद का सर्वस्व कल्याण हो गया हो, वे जगत् का कल्याण करने निकले। और कैसे तप करके, क्या यह कोई लड्डू खाने का खेल है?

गुप्त वेश में मोक्षमार्ग में निकल जाना है

जगत् का कल्याण जब होने वाला होगा

तब होगा। जब कुदरत आपको अपने आप निमित्त बनाए तब बनना न! आप बनने के लिए मत जाना। वह बनने जैसी चीज़ नहीं है! यदि हमारी सिद्धियाँ बेचने लगोगे तो जगत् क्या नहीं देगा? लेकिन उससे आपकी मनुष्य रूपी पूँजी खत्म नहीं, बल्कि मनुष्य रूपी पूँजी चली जाएँगी और नर्क के अधिकारी बन जाओगे! अपना तो मोक्षमार्ग है, इसमें तो गुप्त वेश में निकल जाना है!

कल्याण के लिए चाहिए शुद्ध अहंकार

प्रश्नकर्ता : तो इस जगत् के लिए हमें कुछ भी करने का रहता नहीं है?

दादाश्री : आपको करने का था ही नहीं, यह तो अहंकार खड़ा हुआ है। सिर्फ ये मनुष्य ही अहंकार करते हैं, कर्त्तापन का। अहंकार नहीं करे तो कोई हर्ज नहीं है, पर अहंकार किए बगैर रहते नहीं न!

अहंकारी है इसीलिए अहंकार का *लक्ष* (जागृति) नहीं भूलते। शुद्धात्मा वाला शुद्धात्मा का *लक्ष* नहीं भूलता। हमें ऐसा एक्ज़ेक्ट कर लेना चाहिए ताकि गलती न हो। अभी ज्ञानी पुरुष की हाज़िरी है, तो उनकी हाज़िरी में सबकुछ कर लेना है। क्या इसमें कोई परेशानी आए, ऐसा है?

यानी अहंकार को शुद्ध करना है। शुद्ध कैसे करना है? तब कहते हैं, कि अंदर जो परिग्रह उत्पन्न होते हैं, वे धीरे-धीरे मोह के परमाणु कम करने हैं, क्रोध के परमाणु कम करने हैं, मान के परमाणु कम करने हैं। ये सब परमाणु ही कम करने हैं और अहंकार शुद्ध करना है। अहंकार में क्रोध-मान-माया-लोभ, राग-द्वेष के कोई भी परमाणु नहीं रहे और ऐसा शुद्ध अहंकार हो जाए तब शुद्धात्मा में भीतर एकाकार हो जाता है, कुदरती रूप से।

जगत् कल्याण के लिए ही हमारा जीवन

खुद का दुःख खत्म हो तभी जगत् कल्याण की भावना उत्पन्न होती है। इन भाईओं का सर्वस्व दुःख जा चुका है, इसलिए इन लोगों को पूरे दिन जगत् कल्याण की भावना रहती है।

भाईओं भावना पूर्वक बोलते हों न? 'जगत् का कल्याण करने के लिए ही हमारा जीवन है', कहते हैं। यदि ऐसा लाखों लोग बोलें तो उसके वातावरण से ही जगत् ठीक हो जाएगा। लेकिन एक भी व्यक्ति ने नहीं बोला है। पुस्तक में सबकुछ लिखा है, शास्त्र में लिखा है, पर ऐसा बोला है तो मिकेनिकली बोला है, कैसा बोला है? क्योंकि जब तक खुद ही सुखी नहीं हुआ है तब तक कोई भी ऐसा बोल नहीं सकता। खुद सुखी हो चुका हो, तभी जगत् कल्याण की बात कर सकता है।

कल्याण के हेतु से शुद्धात्मा जाग्रत

जगत् कल्याण के विचार आते हैं तुझे कभी? कभी-कभार आते हैं या बहुत?

प्रश्नकर्ता : दादा, अब उसकी शुरूआत हो रही है। अभी तक ऐसा रहता था कि अभी भी ऐसी कल्याण की भावनाएँ क्यों नहीं होती अच्छी तरह से? अब तो दिखाई देता है कि देखो यह ज्ञान है, यह शुद्धात्मा ऐसा है, अब इसके सामने कल्याण की भावना होती है! यथार्थ रूप से आत्मज्ञान का मतलब है कि कल्याण इस तरह होना चाहिए उसका। और ऐसी निरंतर अनुमोदना के बगैर रहा भी नहीं जाता। नहीं तो दोष में आ गए वैसा पूरा लगता रहता है।

दादाश्री : जगत् कल्याण के लिए पूरे शरीर का उपयोग होने लगा है। वाणी का उपयोग जगत्

कल्याण के लिए होने लगा है। और मन तो शुद्धात्मा में है। जिसे भी देखता है उसे शुद्धात्मा देखता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, शुद्धात्मा।

दादाश्री : फिर ऐसा योग तो मिलेगा नहीं न!

जहाँ-जहाँ और जिस-जिस का जगत् कल्याण का प्रयोजन है वहाँ शुद्धात्मा विशेष रूप से जाग्रत रहता है।

प्रश्नकर्ता : और जितने शुद्धात्मा दिखाई देते हैं, उनसे कहते हैं कि आपका कल्याण हो और हमें कल्याण करने की शक्ति दीजिए। ऐसे तार जॉइन्ट करते रहना है?

दादाश्री : हाँ। ये सभी वहाँ जाकर पवित्र भाव से आंदोलन (परमाणु-स्पंदन) फेंकते हैं। यह आंदोलन धीरे-धीरे हर जगह फैलेगा। फिर सब के विचार सुधरेंगे। इस आंदोलन से, प्रेम भाव से आंदोलन किया जाए न, तो सभी के विचार सुधरेंगे। जिसमें कोई भी स्वार्थ नहीं है और किसी भी तरह की लालसा नहीं है। यदि ऐसे आंदोलन किए जाएँ तो विचार सुधरेंगे।

लोक कल्याण के लिए परानुग्रही बनो

शुद्धात्मा भगवान क्या कहते हैं, कि 'जो दूसरों का ध्यान रखता है, मैं उसका ध्यान रखता हूँ और जो खुद का ही ध्यान रखता है, उसे मैं उसके हाल पर छोड़ देता हूँ।'

संसार एकदम उद्दंडता से उपयोग करने जैसा नहीं है, लेकिन उसका हिसाब रखना है। बहीखाते में कहाँ-कहाँ पर नुकसान है, कहाँ-कहाँ बहीखाते में संसारसुख है, वह भी ढूँढ निकालना पड़ेगा न! व्यापार में बहीखाता रखते हैं, लेकिन संसार में बहीखाता नहीं रखते! संसार के लोगों को व्यवहार धर्म सिखलाने के लिए हम कहते हैं, कि परानुग्रही बन। अपने खुद के बारे में विचार ही न आए। लोक कल्याण हेतु परानुग्रही बन। यदि आप अपने खुद के लिए खर्च करेंगे तो वह गटर में जाएगा और दूसरों के लिए कुछ भी खर्च करें तो वह आगे का एडजस्टमेन्ट है।

आप्तपुत्रों का जुलूस करेगा विश्व का कल्याण

मेरे पास लगभग सौ सहायक लोग हैं। जिन्हें शादी नहीं करनी हैं, उन्हें 'आप्तपुत्र' कहते हैं। मेरे पास ऐसे आप्तपुत्र हैं। बाकी सब लोग तो प्रचार कर देते हैं, सारा काम कर देते हैं, पर आप्तपुत्र तो वहाँ जाकर जानकारी देते हैं। शिविर कर-कर के आप्तपुत्रों को तैयार किया गया है, वे थोड़ा सा ही बोलेंगे फिर भी समझ में आ जाएगा।

ममता रहित, मन-वचन-काया से ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। धन्य है न, इस काल में आश्चर्य ही है न! और ये सब काम करेंगे और वही अपना ध्येय है। हम सभी उसमें निमित्त हैं।

ऊर्ध्व रेत (गमन) हो जाएँ न, तो काम हो जाएगा। उसके बाद जो वाणी निकलती है, उसके बाद जो संयम सुख आता है, उसकी तो बात ही अलग है! यह जोशीला जुलूस है। जितने भी भगवान ने बताए हैं, वे सभी संयम के गुण इनमें हैं।

पाँच नहीं, सौ जितने आप्तपुत्र चाहिए

मुझसे कहते हैं, कि 'इन आप्तपुत्रों के जैसे पाँच लोग हों तो भी बहुत हो गया!' मैंने कहा,

'पाँच लोगों की नहीं सुनेगा जगत्! अभी लगभग सौ चाहिए, एक सौ एक चाहिए!' और हम सभी उन्हें साथ देंगे, तभी कल्याण होगा। सभी ने साथ तो देना चाहिए न, अपनी अपनी उँगली (शक्ति) से। कल्याण हो ऐसी भावना भी होनी चाहिए न!

इन सभी का साथ है न? इन सभी का साथ होगा तभी ये स्तंभ बीच में खड़ा रहेगा। वर्ना, कैसे खड़ा रहेगा? और कोई सहारा होगा तो खड़ा रहेगा। सहारे के आधार से स्तंभ और स्तंभ के आधार पर पूरा तंबू खड़ा रहेगा। जिनसे सहारा दिया जा सके वे सहारा देना, इस तंबू में। हमने तंबू खड़ा किया है। सहारा देना चाहिए न? ये हिन्दुस्तान का कल्याण कर देंगे! हिन्दुस्तान का तो कल्याण करेंगे, लेकिन पूरे विश्व का कल्याण करने निकले हैं! पूरे वर्ल्ड का कल्याण करने के लिए तैयार हुए हैं!

निर्विकारी पद से होगा जगत् कल्याण

ये लोग तो कहते हैं कि 'हमें तो जगत् कल्याण में दादा का पूरा-पूरा साथ देना है।' इसलिए ये ब्रह्मचर्य पालन कर रहे हैं। यह तो मैंने कभी सोचा भी नहीं था, ऐसा नया ही अंकुर फूटा है!

मैं तो ऐसा समझता था कि इस काल में ब्रह्मचर्य रह ही नहीं सकता। पिछले जन्म में भावना की हो, उसे तो रह ही सकता है और अपने साधु-आचार्यों को रहता ही है न! लेकिन अन्य सामान्य लोगों की तो बिसात ही नहीं न! जहाँ निरंतर जलन में जलते रहते हैं, वहाँ पर कोई ब्रह्मचर्य की बातें करने जाएगा क्या? और करेगा तो कोई सुनेगा भी नहीं! लेकिन ऐसे काल में अपने यहाँ यह नया ही निकला है। ब्रह्मचर्य का ऐसा रास्ता निकलेगा, ऐसा तो मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। इस जगत् का कल्याण होने वाला हो, तभी ऐसा मिलता है न! वर्ना, ऐसा सब कहाँ से मिलेगा? हमने तो कभी कल्पना भी नहीं की थी कि हमें ऐसा चाहिए या हमें ऐसा करना है। अभी तो, लड़के सामने से ब्रह्मचर्य के लिए आ रहे हैं।

इसलिए मैं ऐसा करना चाहता हूँ इन ब्रह्मचारियों के लिए, उन्हें समझा-समझाकर और ज्ञान के अनुसार ब्रह्मचर्य की ओर मुड़ जाएँ, ऐसा कर देता हूँ, और मुड़ सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : मुड़ सकते हैं, यह शब्द तो योग्य नहीं लग रहा है। क्योंकि मुड़ सकते हैं, दबा भी सकते हैं, उछल भी सकते हैं, लेकिन ज्ञान से आप उन पर कृपा करें तो बहुत अच्छा हो जाएगा।

दादाश्री : हाँ, कृपा ही। वह तो ये शब्द मुँह से बोलने पड़ते हैं। बाकी कृपापूर्वक होता है।

प्रश्नकर्ता : कृपा के बिना वह साध्य नहीं है, दादा।

दादाश्री : और तैयार हो जाएँगे तो इस देश का कुछ कल्याण कर सकेंगे। इसलिए तैयार हो जाएँगे सभी।

जगत् का परिवर्तन कब कर सकेंगे? आपका शील देखकर ही सामने वाले में परिवर्तन हो जाएगा। आपमें जितना शील, उतना सामने वाले में परिवर्तन हो सकेगा, वर्ना किसी में परिवर्तन हो ही नहीं पाएगा।

शीलवान होना तो बहुत ऊँची चीज़ है। आत्मा मोक्ष स्वरूप ही है। जब से वह रियलाइज़ (अनुभव) हुआ, तभी से मोक्ष स्वरूप ही है।

लेकिन पहले शीलवान बनना पड़ेगा, उसके गुण उत्पन्न होने चाहिए। खुद शीलवान हुआ कि उसके बाद जगत् में सभी उसके निमित्त से बदल जाएँगे। जो मशीनरी उल्टी चल रही थी, वे सब सीधी हो जाती है।

कल्याण का भेख, एक ही ध्येय

निरंतर जगत् कल्याण में, सपने भी जगत् कल्याण के आएँ और कल्याण करके, फिर और क्या कल्याण करना है? पौद्गलिक कल्याण नहीं करना है, उनका यह धार्मिक कल्याण करना है। इन लोगों का पौद्गलिक तो सब हो गया है न। एक ही ध्येय और कुछ नहीं, डाँवाडोल ध्येय नहीं, मिलावटी ध्येय नहीं। सोते-जागते, किसी भी टाइम एक ही ध्येय। अड़चन में भी एक ही ध्येय, अड़चन से परे भी एक ही ध्येय।

पूरे जगत् के कल्याण का जिसने भेख लिया (बीड़ा उठाया) है, उसे संसार में कौन रोक सकेगा? ऐसी कोई शक्ति नहीं है कि संसार में रोक पाए और पूरे ब्रह्मांड के देवता उस पर फूलों की वर्षा कर रहे हैं। एक भी देवी-देवता ऐसे नहीं हैं जिनसे दादाजी की पहचान नहीं हो। इसलिए अब एक ही ध्येय बना दीजिए कि यह एक ही काम करना है। इस शरीर की आवश्यकताएँ वैभव के साथ आएँगी।

हमारी एक ही, अस्त होती हुई इच्छा

जगत् का कल्याण करने में हम तो निमित्त हैं। हम क्या करने वाले हैं? लेकिन निमित्त। हमारा भाव क्या है? पूरा जगत् सुखी हो। तब कहे, 'सिर्फ, हिन्दुस्तान ही?' नहीं भाई, पूरा जगत्, जीवमात्र सुख को प्राप्त करे। फिर कहते हैं, 'सभी जीव?' तब फर्स्ट प्रेफरन्स (पहली पसंद) मनुष्य। और सेकन्ड प्रेफरन्स (दूसरी पसंद) मनुष्य के अलावा सभी। लेकिन सभी जीव सुखी हों, फिर भी फर्स्ट प्रेफरन्स मनुष्यों को। क्योंकि वे लोग दु:ख को समझ सकते हैं और दु:ख को सहन नहीं कर सकते।

यानी यही सब कार्य करना है, जहाँ जाएँ वहाँ पानी का छिड़काव करना है। जगत् में जो अशांति छायी है उस पर पानी छिड़कते रहना है। इस पब्लिक का, हिन्दुस्तान का कल्याण कैसे हो, उसी के प्रयास में हूँ। 'हमारी' एक ही इच्छा है, वह भी अस्त होती हुई, 'जगत् कल्याण की!'

भावना करो निरंतर जगत् कल्याण की

निरंतर जगत् कल्याण की भावना, दूसरी कोई भी भावना नहीं होती। खाने के लिए जो मिले, सोने के लिए जो मिले, ज़मीन पर सोने को मिले, फिर भी निरंतर भावना क्या होती है? जगत् का किस तरह कल्याण हो! अब वह भावना उत्पन्न किसे होती है? खुद का कल्याण हो चुका हो, उसे यह भावना उत्पन्न होती है। जिसका खुद का कल्याण नहीं हुआ हो, वह जगत् का कल्याण किस तरह करेगा? भावना करे तो होगा। 'ज्ञानी पुरुष' मिले तो उसे उस 'स्टेज' में ला देते हैं, और स्टेज में आने के बाद उनकी आज्ञा में रहे तो भावना करना सीख जाता है। 'सभी का कल्याण हो', ऐसी भावना पहले खुद का ही कल्याण करती है!

हमारा खुद का कल्याण हो गया लेकिन वह कब काम में आता है कि औरों का कल्याण हो तो! महावीर भगवान भी परायों के कल्याण के लिए सारी ज़िंदगी जीए थें। क्योंकि उनका तो कल्याण हो गया था। इसलिए अब ऐसा कुछ करो ज़बरदस्त!

महात्माओं द्वारा भी होगा कल्याण

प्रश्नकर्ता : ज्ञान मिलने के बाद, खुद का, आत्मा का जो सुख उत्पन्न हुआ है, निरंतर आनंद रहता है, वह आनंद और वह सुख इस जगत् के लोग पाएँ, यही भावना बाकी रही है, बस!

दादाश्री : जगत् का कल्याण करने के लिए मेरे पास पैंतीस हज़ार लोग हैं! तो दिन-रात मन में क्या बरतते रहता है? कहाँ से कल्याण हो, किस तरह से कल्याण हो! अब, यह ऐसा क्यों है? तो कहे, जिसका खुद का कल्याण हो गया हो, वही जगत् कल्याण ढूँढता है। जगत् कल्याण कब ढूँढता है? खुद के घर का, खुद का हो गया हो कल्याण, तब ढूँढता है न? अब आप किसलिए निकले हैं? ये किसलिए दादा का कार्य करते हो?

प्रश्नकर्ता : भौतिक सुख का तो कल्याण हो गया है, अब आत्मा के कल्याण के लिए।

दादाश्री : इन लोगों का कल्याण कैसे हो, यही हमें देखना है। और इसीलिए हमारा यह जन्म हुआ है। आधे विश्व का कल्याण हमारे हाथों होगा और शेष आधे विश्व का कल्याण हमारे इन फॉलोअर्स (अनुयायिओं) के हाथों होगा। हम इसमें कर्त्ता नहीं हैं, निमित्त हैं।

लघुत्तम पद से होगा लोगों का कल्याण

हमारी यही भावना है कि भले एक जन्म की देर हो जाए तो हर्ज नहीं लेकिन यह 'विज्ञान' फैलना चाहिए और 'विज्ञान' लोगों को लाभ करना चाहिए। इसलिए मैं खुलासा करने आया हूँ। मेरे पास अवकाश है। मुझे कोई काम नहीं है। सब से ज़्यादा फुरसत वाला इंसान मैं हूँ और बिल्कुल बुद्धि रहित सिर्फ मैं ही हूँ, इसलिए मुझे कोई झंझट नहीं है। आपको तो झंझट रहता है। वर्ना, मैं कहीं आपसे बड़ा नहीं हूँ, क्या आपको ऐसा लगता है? यह तो व्यवहार की खातिर ऐसे उच्च पद पर बैठे हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है कि 'मुझे मोक्ष की जल्दी नहीं है', तो ऐसा क्यों?

दादाश्री : मुझे क्या जल्दी है? मुझे लगता है कि मेरा मोक्ष हो ही चुका है, फिर? मोक्ष के लिए जल्दी किसे होती है कि जिसे इन दुःखों से जल्दी छूटना हो न, वह जल्दबाज़ी करता है। मेरा तो मोक्ष हो ही चुका है। अब मेरी इच्छा है कि लोगों का कल्याण हो। उसके बाद हम आराम से जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : वह क्या लघुत्तम भाव है आपका?

दादाश्री : हमारा यह लघुत्तम स्वरूप है इसलिए लोगों का कल्याण कर देगा। हमारा बहुत काम बाकी है।

प्रश्नकर्ता : कितने समय तक करेंगे वह काम?

दादाश्री : नहीं, उसमें हर्ज नहीं है। ऐसा है कि मुझे जिस तरह से जाना है न, उस स्टेशन को आने में देर लगेगी।

प्रश्नकर्ता : तो हमें जल्दी भेज देंगे?

दादाश्री : इनमें से कुछ लोग हैं जो रहेंगे, मेरे साथ में आएँगे। ऐसा कुछ पता लगाने जैसा नहीं है। अपने आप क्या होता है, वह देखते रहो!

कल्याण पथ पर पूर्ण दशा की प्राप्ति

कल्याण हो, ऐसी भावना रखनी है। वही आपमें पूर्ण दशा उत्पन्न करवाएगी। बल्कि उस समय भीतर में बहुत आनंद रहता है, है न? बहुत ही आनंद रहता है। अन्य कुछ जानने जैसा नहीं है।

सिर्फ, आत्मा जानने जैसा था, वह जान लिया। अपना स्वरूप शुद्धात्मा है और विनाशी पर यह जो भी आगे-पीछे होता रहता है, वह सब *पुद्गल* है।

पुद्गल की, आत्मा की सभी शक्तियाँ एक मात्र प्रकट परमात्मा में ही लगाने जैसी हैं। मनुष्य में पूर्ण परमात्म शक्ति है, जिसका उपयोग करना आना चाहिए। 'ज्ञानी पुरुष' सभी शक्तियाँ देने को तैयार हैं, शक्ति आपके अंदर ही पड़ी हुई है। लेकिन आपको ताला खोलकर लेने का हक़ नहीं है। ज्ञानी पुरुष खोल देंगे, तब वे निकलेंगी। इस हिन्दुस्तान का एक ही मनुष्य पूरे वर्ल्ड का कल्याण कर सकता है, उसमें इतनी सारी शक्तियाँ हैं, लेकिन ये शक्तियाँ अभी उल्टे रास्ते पर जा रही हैं, इसलिए सबोटेज (नुकसान) हो रहा है। इसके 'कंट्रोलर' (नियंत्रण करने वाले) की आवश्यकता है। 'ज्ञानी पुरुष', 'सत् पुरुष' और 'संत पुरुष' इसके निमित्त होते हैं।

ज्ञानी की शरण में हो सकते हैं पूर्ण

'दादा' तो संपूर्ण सुखी हैं और उनकी शरण ली फिर कठिनाई ही कहाँ? जितने स्वार्थ वाले हैं न, जिन्हें कोई न कोई स्वार्थ है, वे दुखियारे हैं। ऐसों की शरण ली तो फिर दुःखी ही होंगे न? जो दुखियारा है, वह खुद अपनी दरिद्रता दूर नहीं कर सका तो वह आपकी क्या दूर करेगा? जो पूर्ण स्वरूप हैं, अनंत सुख के धाम हैं, जिन्हें किसी भी तरह का कोई स्वार्थ नहीं हैं, जिन्हें कोई इच्छा नहीं रही, उनके पास जाकर उनकी शरण ली तो फिर पूर्ण ही हो जाते हैं।

'हम' पूरे जगत् के दुःख लेने आए हैं, जिन्हें सौंपने हों वे इन 'दादा' को सौंप जाए।

दादा ने लुटाया है गहन ज्ञान

मैं तो क्या कहता हूँ कि, 'मेरे साथ चलो सभी।' तब कहते हैं, 'नहीं, आप एक कदम आगे।' तब मैं कहता हूँ कि, 'एक कदम आगे, पर मेरे साथ चलो।' मैं आपको शिष्य नहीं बनाना चाहता हूँ। मैं आपको भगवान बनाना चाहता हूँ। आप हो ही भगवान, आपका वह पद आपको दिलवाना चाहता हूँ। मैं कहता हूँ कि, 'तू मेरे जैसा बन जा बिल्कुल! तू तेजवान हो जा। मेरी जो इच्छा है, वैसा तू हो जा न!'

मैंने तो अपने पास कुछ रखा नहीं है, सबकुछ आपको दे दिया है। मैंने कुछ भी जेब में नहीं रख छोड़ा है। जो था वह सबकुछ ही दे दिया है, सर्वस्व दे दिया है! पूर्ण दशा का दिया हुआ है सारा। हमें तो आपके पास से कुछ भी चाहिए नहीं। हम तो देने आए हैं, सारा हमारा ज्ञान देने आए हैं। इसीलिए यह सब ओपन (खुला) किया है। इसलिए लिखा है न, 'दादा ही भोले हैं, लुटा दिया है ज्ञान गहन।'

ज्ञान कोई लुटाता ही नहीं न! अरे, इसे लुटाने दो न! तो लोगों को शांति हो, ठंडक हो जाए। यहाँ मेरे पास रखकर मैं क्या करूँ? उसे दबाकर सो जाऊँ?

और नियम ऐसा है कि इस दुनिया में हर एक चीज़ जो दी जाती है, वह कम होती है, और सिर्फ ज्ञान ही देने से बढ़ता है! वैसा स्वभाव है। सिर्फ ज्ञान ही! दूसरा कुछ भी नहीं। दूसरा सबकुछ तो घटता है। मुझे एक व्यक्ति कहता है कि, 'आप जितना जानते हैं उतना क्यों कह देते हैं? थोड़ा कुछ डिब्बी में नहीं रखते?' मैंने कहा, 'अरे, देने से तो बढ़ता है! मेरा बढ़ता है और उसका भी बढ़ता है, तो क्या नुकसान होता है मेरे (ज्ञान) में?

लुटाने के लिए चाहिए जिगर

जो (अपने) पास में है उसे लुटा दो और वह भी अच्छे काम के लिए, मोक्ष के लिए या फिर मोक्षार्थियों, जिज्ञासुओं के लिए या फिर ज्ञानदान के लिए लुटा देना। वही मोक्ष का मार्ग है। जब मैं लुटा देता था तब ये भाई मुझसे पूछते थे, कि 'क्या ये मोक्ष का मार्ग है?' मैंने कहा, 'यही मोक्ष का मार्ग है।' इसके अलावा और कौन सा मोक्ष का मार्ग होगा? खुद के पास जो हो, वह लुटा देना, उसे कहते हैं मोक्ष का मार्ग।

प्रश्नकर्ता : लुटाने के लिए जिगर चाहिए?

दादाश्री : हाँ, जिगर चाहिए। मोक्ष में जाना हो तो जिगर अपने आप (उत्पन्न) होगा। देखो, कितना जिगर है न! इस काल में ज्ञान मिलने से मोक्ष होगा तो ज़रूर लेकिन साथ ही यदि यह भावना हो न, तो बहुत हेल्पफुल होगा। स्पीडी होगा। बिना रुकावट के होगा। मोक्ष तो ज्ञान का ही फल है लेकिन साथ ही यह एक भावना चाहिए, लुटाने की!

अपने पास पाँच पैसे हों तो चार पैसे भी लुटा देना। ये लखपति लोग कुछ भी करें, करोड़ाधिपति हों, वे चाहे जो करें! हम यदि उनके साथ दोड़ेंगे तो बीमार पड़ जाएँगे। वैसा नहीं करना है लेकिन भावना ऐसी ही रखना कि लुटा देने हैं।

कल्याण के लिए बहे, ज्ञानी की कारुण्यता

ये ज्ञानी पुरुष के वचन हैं, तो वचनबल भी काम करता है और इसमें हेतु भी काम करता है। इसके पीछे करुणा भी काम करती है। इस वचन के पीछे हमारी करुणा रही है! कैसी करुणा? अपेक्षा रहित। कोई मान नहीं चाहिए, तान नहीं चाहिए। तेरे पास से ये संसार की कोई चीज़ नहीं चाहिए। इसलिए किस हेतु से है? करुणा के हेतु से है।

हम क्या कहते हैं कि सर्व दु:खों का क्षय करो। ये दु:ख हमसे देखे नहीं जाते। फिर भी हम में 'इमोशनल'पन नहीं होता है। साथ ही उतने ही वीतराग भी हैं। इसके बावजूद सामने वाले के दु:ख हमसे सहन नहीं हो पाते। क्योंकि हम अपनी सहनशक्ति जानते हैं। हमसे कैसा दु:ख सहन होता था, वह जानते हैं न, तो ये लोग ऐसा कैसे सहन कर पाते होंगे, उसका हमें पता है और वही कारुण्यता है हमारी!

ज्ञानी पुरुष खुद एब्सल्यूट (संपूर्ण) होने से उनके लिए आधार-आधारित संबंध नहीं रहे। एब्सल्यूट! भले ही जगत् कल्याण की यह भावना रही है लेकिन खुद हुए तो हैं एब्सल्यूट! एब्सल्यूट अर्थात् निरालंब। उन्हें किसी अवलंबन की ज़रूरत नहीं है! स्वतंत्र! केवल ही, अन्य कोई मिक्स्चर (मिलावट) नहीं।

अपवाद, गृहस्थी फिर भी ज्ञानावतार

इस काल के लोग बहुत पुण्यशाली हैं कि उन्हें दु:ख भी बहुत से आए लेकिन कितनों का पुण्य बहुत हैं। इसलिए ये ज्ञानी पुरुष गृहस्थ भाव में हुए हैं। और ऐसा है न, मेरी जगह यदि कोई त्यागी ज्ञानी पुरुष होते न, तो आपका, गृहस्थियों का कल्याण कैसे होता? क्योंकि आपके मन में तो ऐसा ही रहा करता कि, 'वे तो त्यागी हैं इसलिए वे ऐसा सब कर सकते हैं लेकिन हम से कैसे हो सकता है? हम तो गृहस्थी हैं।' तो कुदरत का नियम ऐसा होता है कि वह कभी कभार गृहस्थी को भी ज्ञानी बना देती है। अत: गृहस्थियों के मन में ऐसा होता है कि यदि ये (ज्ञानी) इन सभी में रह सकते हैं तो मुझसे क्यों नहीं रहा जाएगा, ऐसा उन्हें उदाहरण मिलता है।

ज्ञानी पुरुष एक क्षण के लिए भी देह में नहीं रहते हैं। फिर भी उनका व्यापार चलता है, वह भी आश्चर्य है न! तब फिर आपको हिम्मत आएगी या नहीं? कि 'ये व्यापार करते हैं और वीतरागता से रहते हैं, तो फिर मैं क्यों नहीं रह सकता?' और मेरी जगह यदि कोई त्यागी होते तो आपको ऐसा होता कि 'वे तो पत्नी-बच्चे का त्याग कर चुके हैं और मैं तो पत्नी-बच्चे वाला हूँ इसलिए अपने से कुछ नहीं हो सकेगा।' वैसा भेद पड़ जाता।

बाकी, यह तो अपवाद है। वर्ना, ज्ञानी घर में रहते ही नहीं। संपूर्ण ज्ञानी घर में नहीं रहते। ऐसा होता ही नहीं न! यह तो कभी कभार ही यदि ज़बरदस्त पुण्य हो तभी! कितना ज़्यादा ज़बरदस्त पुण्य! और ज्ञान का प्रताप कितना अधिक होगा तभी रह सकते हैं! वह भी आश्चर्य है न! लोगों का पुण्य जागा है। यह तो, हम केवलज्ञान में फेल हुए हैं। फेल हुए तो लोगों के काम में आ गए न!

नियाणां, जगत् कल्याण का ही

तीन लोकों के नाथ हमारे वश हो गए हैं! उनके पास वाणी नहीं है, हाथ-पैर नहीं हैं, इसलिए हमारे वश हो गए हैं और हमें कल्याण का निमित्त बनाया है! इसलिए हम तो कह देते हैं कि जब तक यह बुलबुला (देह) है, तब तक काम निकाल लो।

ज्ञानी पुरुष सूक्ष्म देह से पूरे वर्ल्ड में घूमते हैं और जगत् का कल्याण करते हैं। 'ज्ञानी पुरुष' कमरे में बैठे-बैठे घूमते हैं, ऐसा तो कोई घूमता ही नहीं है। जिनका जगत् कल्याण का *'नियाणां'* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक चीज़ की कामना करना)' न हो, वे 'ज्ञानी' नहीं हैं। जिनका और कोई *'नियाणां'* हो, वे 'ज्ञानी' ज्ञानी ही नहीं हैं।

जिन्हें केवल जगत् कल्याण करने की ही भावना रहती हो और संसार का कुछ भी मोह नहीं रहा हो, सब 'ड्रामेटिक' (नाटकीय) करते हों, वे 'तीर्थंकर गोत्र' बाँधते हैं!

ये जगत् कल्याण किस तरह से हो, ऐसी भावना करनी है, यह अंतिम भावना है। वह तीर्थंकर गोत्र के लिए नहीं लेकिन यह भावना करने से क्या होता है? हमारे भीतर क्लियर (साफ) हो जाता है और अन्य कोई रोग घुसता नहीं है।

कल्याण की भावना से बंधता है तीर्थंकर गोत्र

प्रश्नकर्ता : दादा, यह तीर्थंकर गोत्र किस तरह बंधता है?

दादाश्री : जगत् का कल्याण करने की ही भावना, अन्य कोई भावना ही नहीं होती। खुद का कल्याण हो या न हो पर खुद के दु:ख के लिए नहीं रोते हैं, लोगों के दु:ख के लिए ही रोते हैं, वे धीरे-धीरे-धीरे तीर्थंकर बनने लगते हैं। जो खुद के सुख के लिए रोते रहते हैं, उनसे कभी भी कुछ नहीं हो पाता। जिन्हें लोगों के दु:ख सहन नहीं होते, पूरे जगत् का कल्याण करने की इच्छा हो, वे फिर तीर्थंकर बनते हैं।

इस संसार अग्नि में निरंतर जलते जीव, वे संसार में भटकते रहते हैं। इधर से उधर भटकते हैं और घबराए हुए, नहाने के बाद भी जल्दबाजी में घबराएँ हुए घूमते हैं। उनका कल्याण करने की जो भावना करते हैं, वे तीर्थंकर गोत्र बाँधते हैं।

तीर्थंकर अर्थात् जिन्हें देखने से ही कल्याण हो जाता है! वे वाणी ऐसी बोलते हैं, मीठी अंगूर

जैसी! उसे सुनते ही इंसान में परिवर्तन हो जाता है।

अनंत जीव विपरीत मार्ग में विचरते हैं। उनमें से एक ही जीव को सद्मार्ग में, धर्म में मोड़ लें, वे तीर्थंकर गोत्र बाँधते हैं।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी बनने के बाद तीर्थंकर बनते हैं?

दादाश्री : ज्ञानी बनने के बाद तीर्थंकर या केवली भी बन जाते हैं लेकिन ज्ञानी की परिणति ही ऐसी होती है, कि किस तरह से जगत् का कल्याण हो! इसलिए ज्यादातर तीर्थंकर गोत्र ही बाँधते हैं। एक जीव को यदि मोड़ ले तो भगवान ने कहा है, कि वह तीर्थंकर गोत्र बाँधेगा, एक ही जीव को!

देह है, तो संसार में है ही। संसार में यानी जो संडास जाते हैं, वे सभी संसारी ही कहलाते हैं। लेकिन उनका भाव कहाँ है, वह हमें देखना है। यदि वे भाव कषायों में हो तो वे संसारी कहलाते हैं। और भाव लोक कल्याण में ही हो तो वे तीर्थंकर गोत्र बाँधते हैं। और भाव खुद के आत्मा में ही हो, वे मोक्ष में जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : जगत् का कल्याण करने की भावना वाला हो, वही तीर्थंकर गोत्र बाँधता है न?

दादाश्री : हाँ! लेकिन पहले खुद का कल्याण हो जाए, उसके बाद वह तीर्थंकर गोत्र बाँधता है। उससे खुद में आनंद बढ़ जाता है, फिर ऐसा आनंद लोगों को प्राप्त हो जाए तो अच्छा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह उसका *नियाणां* होता है न कि, 'जो मैं पाया हूँ, वह जगत् पाएँ।'

दादाश्री : हाँ, वह खुद का *नियाणां,* वे पाएँ, बस।

प्रश्नकर्ता : और जगत् को प्राप्ति कराने के लिए जो कुछ भी करना पड़े वह मैं करूँगा, ऐसा भाव होता है।

दादाश्री : हाँ! इसीलिए तीर्थंकर गोत्र बंधता है। लोगों के लिए जो कुछ भी किया जाता है, वह सब तीर्थंकर गोत्र बाँधता है।

तीर्थंकरों की कल्याण भावना

दादा की इच्छा ऐसी है कि, 'यह जगत् थोड़ा भी सच्चा ज्ञान और सच्चा मार्ग प्राप्त करे और कुछ मोक्ष पाएँ और कुछ शांति पाएँ, कुछ वीतराग मार्ग को पाएँ और कुछ सच्चे धर्म को पाएँ।' यही दादा की इच्छा है, और कोई इच्छा नहीं है। उस इच्छा के लिए ही है यह सबकुछ। तीर्थंकरों को भी ऐसी ही इच्छा रहती है।

तीर्थंकरों ने तो जगत् का कल्याण करने की भावना की है। भावना कब की? उनके एक-दो जन्म से पहले। पिछले जन्म में और उससे पिछले जन्म में कि, 'मुझे जो सुख मिला है, वैसा सुख जगत् में हो। और जगत् ऐसी स्थिति में न रहे। दुःखी स्थिति में न हो।' यानी ऐसी भावना की है कि, 'जगत् का कल्याण हो, उसमें मैं निमित्त बनूँ।' तब वह तीर्थंकर गोत्र बाँधा, तीर्थंकर नामकर्म बाँधा। वे जहाँ-जहाँ जाते हैं न, वह तीर्थभूमि कहलाती है। जहाँ-जहाँ घूमते हैं, वह सारी भूमि ही तीर्थ की। फिर हम लोग कई सालों तक उस तीर्थभूमि पर घूमते रहते हैं, पवित्र भूमि पर। यानी कि तीर्थंकर नामकर्म बाँधा हुआ हो, वह नामकर्म उस समय डिस्चार्ज होता रहता है। डिस्चार्ज हो जाने के बाद कॉज़ेज़ रहे नहीं, इसलिए सीधे मोक्ष में चले गए। और केवली सीधे मोक्ष

में चले जाते हैं। उन्हें दूसरी कोई झंझट नहीं न! पोटलियाँ नहीं।

वाणी : केवली की, तीर्थंकरों की

प्रश्नकर्ता : सामान्य केवली भगवंत की और तीर्थंकर की वाणी में क्या फर्क है?

दादाश्री : बहुत फर्क है। तीर्थंकर भगवान की वाणी तो 'अतिशय' सहित होती है और केवली की वाणी तो जैसा मैं बोलता हूँ न, उनकी वाणी मुझसे चार डिग्री ज़्यादा उच्च प्रकार की होती है। मेरी तीन सौ छप्पन डिग्री के बजाय तीन सौ साठ डिग्री हो जाए न तो मैं जैसा बोलूँ ऐसा ही वे केवली बोलते हैं। लेकिन केवली किसी का कल्याण नहीं करते। खुद अकेले ही बूझते हैं, लेकिन दूसरों का दीपक जला नहीं सकते। तीर्थंकर के अलावा या भेदविज्ञानी के अलावा कोई भी दूसरों को नहीं बूझा पाते।

प्रश्नकर्ता : केवलज्ञान होने के बाद भी कुछ समय तक शरीर रह सकता है?

दादाश्री : अच्छी तरह रहता है, कहाँ जाएगा? आयुष्य कर्म पूरा हो जाने पर शरीर छूटता है। भगवान महावीर को लगभग बयालीस साल की उम्र में केवलज्ञान हुआ था। फिर बहत्तर साल तक जीए। वे तीस साल खुद का आयुष्य कर्म पूरा करने के लिए थे। कोई चारा ही नहीं न! वह छोड़ता ही नहीं है न! वह बंधन है एक तरह का। हम लंबे आयुष्य की भावना क्यों रखते हैं? लोगों के, जगत् कल्याण के लिए। आप सब के संसारी सुख के लिए नहीं, लोगों का कल्याण हो, अपना कल्याण हो ऐसा!

क्षत्रिय बाँधते हैं तीर्थंकर गोत्र

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकर पद कोई भी व्यक्ति बाँध सकता है?

दादाश्री : यों ही क्या तीर्थंकर बन सकते हैं, भाई? इसलिए भगवान ने कहा है न, कि सभी जितने क्षत्रिय हैं उतने ही तीर्थंकर बनने लायक हैं, दूसरे कोई या ब्राह्मण तीर्थंकर नहीं बन सकते, उसी प्रकार वैश्य भी नहीं बन सकते। तीर्थंकर नहीं बन सकते, वे केवली बनते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, वह तो वैसे भी हिम्मत का काम है न!

दादाश्री : यानी सिर देना हो तो ऐसे अलग ही रख दे। साफ हृदय! जितना बोले न, उसमें फिर कहेंगे, 'भाई, आज से लक्ष्मी-वक्ष्मी कुछ नहीं चाहिए।' ऐसा खुद मन से बोले न, तो गिन्नियाँ-विन्नियाँ सबकुछ दे देते हैं। और वैश्य तो गिन्नियाँ थोड़ी सी रहने देगें। कहेगा, 'भाई, कल सुबह दूँगा।' कल सुबह क्या रहेगा और क्या नहीं, वे (क्षत्रिय) विचार नहीं करते।

प्रश्नकर्ता : वह तो कहा जाता है न, हरि का मार्ग है शूरवीर का...

दादाश्री : ममता की ग्रंथि सब से पहले निकल जाए ऐसी हो तो, वह क्षत्रियों की ही निकलती है। दूसरें किसी की ममता की ग्रंथि नहीं निकलती, बहुत देर से निकलती है।

ममता छूटने पर, हो कल्याण भाव

खुद की ममता छूट गई हो तो लोगों का कल्याण करने की भावना होती है। जगत् का कल्याण करने की भावना उसे ही होती है। वही तीर्थंकर गोत्र बाँध सकता है। ममता छूटे बगैर यह नहीं हो सकता। जिन्हें एक सेन्ट भी ममता है, वे किसी का कल्याण नहीं कर सकते। उनकी दृष्टि ममता की ओर ही होती है। आप सभी की

ममता 100 प्रतिशत निकाल दी है लेकिन फिर भी डिस्चार्ज में तो है न, अभी भी। हमारी डिस्चार्ज ममता भी चली गई है। हम में ममता हैं ही नहीं। हमें तो कहा हो कि, 'छोड़ दो इसे, तो यह छोड़ दिया, लो।' उसका झंझट ही नहीं न!

ये भाई जो कुछ भी करते हैं, किसी को टेलीफोन करते हैं, किसी के घर पत्र लिखकर खबर देते हैं, वह किसलिए? उन्हें कोई कीर्ति नहीं चाहिए। ये तीर्थंकर गोत्र बाँधने की तैयारी कर रहे हैं। लोगों को तो राई के दाने-दाने पर ममता है, वह ममता कैसे जाएगी? ममता को जो-जो लोग मारने निकले हैं, उनकी तो ममता ने हिम्मत ही तोड़ दी है। ज्ञानी की शरण में जा तो ममता का निकाल कर देंगे और मारेंगे नहीं। मारना, वह तो *तरछोड़* (ज़्यादा द्वेषपूर्वक तिरस्कार) कहलाता है। हम किसी को *तरछोड़* नहीं मारते। हमें किसी पर राग-द्वेष नहीं होते। किसी भी चीज़ को छोड़ने-करने को नहीं कहते।

निरीच्छक पद में महावीर ने वेदन किया तीर्थंकर गोत्र

महावीर भगवान ने कहा था कि पुण्यशालियों के लिए 2400 साल के बाद अपवाद मार्ग निकलेगा, तो आज यह अपवाद मार्ग प्रकट हुआ है! महावीर भगवान को पूर्व जन्म में जगत् कल्याण के अलावा अन्य कोई विचार आता ही नहीं था। उसके बाद तीर्थंकर गोत्र बंध गया। यही विचार आता रहता था, फिर तीर्थंकर गोत्र बंध गया। फिर उसका वेदन किया। तीर्थंकर गोत्र का वेदन किया तब लोग कहने लगे कि उन्होंने किया। अरे, वेदन किया है उन्होंने पूरा तीर्थंकर गोत्र! जन्म से लेकर अंत तक, निर्वाणकाल तक का उन्होंने वेदन किया है। क्या है वह?

प्रश्नकर्ता : निकाचित कर्म है।

दादाश्री : हाँ! उस तीर्थंकर गोत्र का वेदन किया उन्होंने। उनकी जो देशना है, वह उनका वेदन था। वेदन यानी क्या? खुद की इच्छा न हो फिर भी बोलते ही रहते थे। इच्छा ही रही नहीं न! जहाँ पर खुद की इच्छा ही नहीं रही, तभी तो तीर्थंकर गोत्र बंध गया। निरीच्छक दशा यानी संसार की पौद्गलिक परिणति ज़रा भी न हो, तब तीर्थंकर गोत्र बंधता है।

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकर गोत्र, वह भी एक प्रकार की आकांक्षा है, मुक्ति की आकांक्षा ही है न?

दादाश्री : हाँ! वह भी आकांक्षा है। वह तो सहज भाव से होती रहे न, तो ठीक है, हर्ज नहीं। बाकी, आकांक्षा काम की ही नहीं है, किसी भी प्रकार की इच्छा ही नहीं और निरीच्छक दशा होनी चाहिए। निरीच्छक दशा में क्या होता है, वह देखना है और जानना है। अन्य किसी में नहीं उतरना है।

प्रश्नकर्ता : मुक्ति या संसार, दोनों को समान मानते हैं।

दादाश्री : बस, पर वह अंतिम दशा की बात है। लेकिन जिसका अन्य व्यापार हो तो अन्य व्यापार के बजाय यह व्यापार शुरू करे। यानी वह अन्य व्यापार बंद हो जाए तो यह व्यापार तो सब से उत्तम है। जगत् कल्याण करने की भावना, खुद का कल्याण हो जाने के बाद, वह भावना उत्पन्न होती है।

कल्याण की भावना का फल, तीर्थंकर पद मूर्तरूप में

तीर्थंकरों को ज्ञान होने के बाद अंतिम भाव

उत्पन्न होता है, जगत् कल्याण करने का। खुद का कल्याण हो गया, अब दूसरों का किस तरह कल्याण हो, वैसे भाव उत्पन्न होते हैं। वैसे भाव के फल स्वरूप वह भावात्मा वैसा हो जाता है। पहले भावात्मा तीर्थंकर बनता है, फिर द्रव्यात्मा तीर्थंकर बनता है। वह भी निर्विकल्प का फल नहीं है, विकल्प का फल है, भाव का फल है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि वीतराग दशा प्राप्ति के बाद में भावना कैसे हो सकती है? वे तो संपूर्ण इच्छा रहित हो जाते हैं न?

दादाश्री : अब, उन्हें कल्याण करने की भावना नहीं रहती। उन्हें कल्याण करने की जो भावना थी, तो अभी वे उसका फल भोग रहे हैं, तीर्थंकरपन भोग रहे हैं। मुझे कल्याण करने की भावना है, इसलिए मैं 'खटपटिया वीतराग' कहलाता हूँ और वे वास्तविक वीतराग कहलाते हैं।

जैसे एक व्यक्ति परीक्षा देने के बाद में, कभी भी स्कूल में नहीं जाए तब भी परिणाम तो आएगा ही न? उसके नाम से परिणाम आएगा या नहीं आएगा?

प्रश्नकर्ता : आएगा।

दादाश्री : उसी प्रकार से यह तीर्थंकर के नाम से परिणाम आया है और मैं यह परीक्षा दे रहा हूँ। यानी कि मेरा यह भाव है कि इन लोगों का कल्याण हो। जैसा मेरा कल्याण हुआ, किस प्रकार से लोगों का भी वैसा ही कल्याण हो, ऐसी मेरी भावना है। उन्हें ऐसा नहीं रहता। उन्होंने पिछले जन्मों में ऐसा किया था। उन्हीं दिनों उन्होंने तीर्थंकर गोत्र बाँधा था। अब सिर्फ उस तीर्थंकर गोत्र को खपा रहे हैं। उनका डिस्चार्ज ही होता रहता है। इसलिए उन्हें केवल करुणा है!

तीर्थंकर भगवान जो क्रियाएँ करते हैं, वे दिखाई देती हैं लेकिन वे खुद उनमें नहीं होते। और मैं इनमें रहता हूँ, मैं कारण में हूँ और वे कार्य में हैं। कार्य अर्थात् पूर्ण हो गए। उनके बोलने से ही कार्य पूरा हो जाता है। बहुत सूक्ष्म बातें हैं ये सारी।

सिर्फ, उपस्थिति से ही जगत् कल्याण

प्रश्नकर्ता : फिर ऐसे व्यक्ति का जगत् में किस प्रकार का प्रदान रहता है अथवा जगत् कल्याण में उनका क्या महत्व है?

दादाश्री : उनकी उपस्थिति ही जगत् का कल्याण कर देती है। उपस्थिति ही, प्रेज़न्स से ही! जब जगत् का कल्याण होना होता है तब वे प्रकट हो जाते हैं। उनकी उपस्थिति ही कल्याण कर देती है। जैसे कि यहाँ पर गर्मी के दिनों में अगर उस तरफ बर्फ पड़ी हो, दरवाज़े के पास और हम सब इस दरवाज़े से अंदर आएँ हो पर हवा आती है। यानि बर्फ की हवा अंधेरे में आए तो भी पता चल जाता है कि आसपास कहीं बर्फ है। उसकी उपस्थिति ही काम करती है।

कल्याण के लिए वर्तमान में हाज़िर

आपने यहाँ पर सीमंधर स्वामी का नाम तो सुना है न? वहाँ ऊपर तस्वीर है! वे अभी तीर्थंकर हैं महाविदेह क्षेत्र में! महाविदेह क्षेत्र में वे हाजिर हैं आज।

सीमंधर स्वामी की उम्र पौने दो लाख साल की है! अभी और सवा लाख साल जीवन के बाकी है! उनके साथ तार जोड़ देता हूँ क्योंकि वहाँ जाना है। यहाँ से सीधा मोक्ष नहीं होने वाला। अभी एक जन्म बाकी रहेगा। उनके पास बैठना है इसलिए तार जोड़ देता हूँ।

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी भगवान के साथ आप किस तरह से संधान में रहते हैं?

दादाश्री : मैं तो तन्मयाकार रहता हूँ उनके साथ, इस शरीर में नहीं रहता। मैं शरीर से बाहर रहता हूँ। 26 साल से इस शरीर में नहीं रहा। मेरी इस शरीर पर मालिकी भी नहीं है। इस वाणी पर भी मालिकी नहीं है। यह वाणी कौन बौलता है? टेपरिकॉर्ड। ओरिजनल टेपरिकॉर्ड बोलती है, और मैं तो ज्ञाता-द्रष्टा हूँ। यह ओरिजनल टेपरिकॉर्ड वक्ता है, आप श्रोता हो, इस प्रकार व्यवहार चलता है, वह सारा। यानी सीधे सीमंधर स्वामी के प्रताप से यह सब है। इसमें मेरा कुछ भी प्रताप नहीं है। मैं तो निमित्तमात्र हूँ। वे तो वर्तमान तीर्थंकर कहलाते हैं।

सीमंधर स्वामी तो कैश (नकद) कहे जाते हैं। चाहे अन्य क्षेत्र में हों, लेकिन वे हाज़िर हैं, उनके साथ हमारा तार और सब (संधान) चलता रहेगा। पूरे जगत् का कल्याण होना ही चाहिए। हम तो निमित्त हैं। इसलिए 'दादा भगवान' थ्रू (द्वारा) दर्शन करवाता हूँ और वह वहाँ पहुँच जाता है। इसलिए हमने एक जन्म कहा है न, तो यहाँ से फिर वहीं पर जाना है और उनके पास बैठना है। उसके बाद छुटकारा होगा। इसलिए आज से पहचान करवा देते हैं और 'दादा भगवान' थ्रू नमस्कार करवाते हैं।

निष्पक्षपाती त्रिमंदिर कल्याण के लिए

प्रश्नकर्ता : हम सीमंधर स्वामी, कृष्ण भगवान और शंकर भगवान एक साथ हो ऐसा मंदिर बनाने वाले हैं, तो उसका हेतु क्या है?

दादाश्री : ये मतार्थ खत्म करने के लिए हैं! वहाँ पर तीन मंदिर बन रहे हैं। इन सीमंधर स्वामी का, जो जीवित हैं, उनके लिए बन रहा है। कृष्ण भगवान जीवित हैं, उनका बन रहा है और 'शिव' अर्थात् कल्याण स्वरूप ज्ञानी, वे भी जीवित हैं। अतः तीनों ही मंदिर बन रहे हैं। तो सभी लोग दर्शन करके जाएँगे। उससे इन लोगों के सारे मतार्थ चले जाएँगे। इन मूर्तियों में ऐसी प्रतिष्ठा करूँगा! मूर्तियाँ बोलेंगी आपके साथ! मूर्तियाँ बातें करेंगी! प्रतिष्ठा तो, जिनमें अहंकार नहीं हो न, वे ही प्रतिष्ठा कर सकते हैं या फिर जिनका अहंकार उपशम हो चुका है, वे कर सकते हैं।

अभी जगत् के मतार्थ निकालने के लिए यह निष्पक्षपाती धर्म है। पूरा अवसर्पिणी काल बीत गया। अभी तक तो मतार्थ में चले हैं! भगवान महावीर का शासन है, तभी तक धर्म है। फिर धर्म का अंश भी नहीं रहेगा, मंदिर-पुस्तकें कुछ भी नहीं रहेगा। इसलिए अठारह हज़ार सालों में यदि सचेत हो जाए और मतार्थ में से छूट जाए तो ऋषभदेव भगवान ने जैसे निष्पक्षपाती झुकाव के बारे में बताया था, वैसा निष्पक्षपाती झुकाव वापस हो जाए।

हर कोई अपने-अपने मंदिर अलग रखे, लेकिन मंत्र तो सब के एक साथ बोलने चाहिए। किसी का किसी से आपस में बैर नहीं होना चाहिए। मंत्र साथ में बोलेंगे तो सब पहुँच जाएगा। अपने मन में जुदाई नहीं है, तो कुछ भी अलग है ही नहीं। अतः ये तीनों ही मंदिर इकट्ठे बनेंगे तो हिन्दुस्तान में से मतार्थ चले जाएँगे तो शांति हो जाएगी!

जगत् का कल्याण करना हो तो मतार्थ निकालने पड़ेंगे। मतार्थ निकालने के लिए सभी धर्मों को त्रिमंदिर में स्थापित करना पड़ेगा। पक्षपात से आत्यंतिक कल्याण नहीं होता बल्कि पाक्षिक कल्याण होता है!

प्रश्नकर्ता : अब सीमंधर स्वामी के साथ कृष्ण भगवान, शिव भगवान भी स्थापित किए हैं। सीमंधर स्वामी तो वीतराग माने जाते हैं न?

दादाश्री : हाँ, वीतराग ही माने जाते हैं और कृष्ण भगवान तो वासुदेव, नारायण कहे जाते हैं। जो नर में से नारायण बने हैं, वे। वे तिरसठ शलाका पुरुषों में आते हैं और फिर अगली चौबीसी में तीर्थंकर बनने वाले हैं। तीर्थंकरों ने उन्हें एक्सेप्ट (स्वीकार) किया है। और ज्ञानी को शिव के तौर पर एक्सेप्ट किया हुआ है। जो कोई भी ज्ञानी बनता है, वह शिव कहलाता है। यानी कि इन सभी को एक्सेप्ट किया हुआ है। इससे सभी के मतभेद चले जाएँगे।

हम जो मंदिर बनाने वाले हैं, वह तो हमें अनिवार्य (आवश्यक) हो गया है, बनवाना ही पड़ेगा। यह तो सीमंधर स्वामी का है। जिनका मंदिर बनाओ वे जीवंत होने चाहिए। ये तो तीर्थंकर साहब हैं। जगत् के लोगों के कल्याण के लिए यह बन रहा है।

इन तीन मंदिरों में मूर्तियाँ देखोगे तब आपको भव्यता महसूस होगी। हम भगवान की मूर्ति के दर्शन करते हैं, तब मूर्ति क्या कहती है? 'भाई, यह माल मेरा नहीं है, यह माल तेरे ही शुद्धात्मा का है।' इसलिए मूर्ति आपके शुद्धात्मा को वापस भेज देती है। इसे परोक्ष भक्ति कहा जाता है!

लोगों का कल्याण तो कब होगा? जब हम बिल्कुल शुद्ध हो जाएँगे तब, बिल्कुल शुद्ध! प्योरिटी ही सभी को, पूरे संसार को आकर्षित करती है!

अरिहंत के दर्शन से प्राप्त होता है मोक्ष फल

हम जिन्हें ज्ञान देते हैं न, वे एक-दो अवतारी बन जाते हैं। फिर उन्हें वहाँ सीमंधर स्वामी के पास ही जाना है। उन्हें सिर्फ तीर्थंकर के दर्शन करने ही बाकी रहते हैं। बस, दर्शन होने से ही मोक्ष। यह अंतिम दर्शन करते हैं न, इन दादा के दर्शन से आगे के वे दर्शन हैं। वे दर्शन हो गए कि तुरंत मोक्ष! बाकी सब तो यहाँ पर ज्ञानी पुरुष ने तैयार कर दिया है। अब तीर्थंकर द्वारा वर्क लगाना बाकी है!

यह सीमंधर स्वामी का मंदिर बन जाए तो अच्छा। लोगों के हित के लिए है। यहाँ जितने लोग सीमंधर स्वामी के दर्शन करेंगे न, उतना ही अधिक फलदायी हो जाएगा। क्योंकि ये हाज़िर तीर्थंकर कहलाते हैं, बहुत हेल्प फुल हैं! सीमंधर स्वामी के मंदिर बनने चाहिए तो इस देश का बहुत भला होगा।

ये मंदिर (त्रिमंदिर) इसलिए हैं कि जगत् सीमंधर स्वामी को पहचान सके। 'सीमंधर स्वामी कौन हैं?', वह पहचान सके। घर-घर में सीमंधर स्वामी के फोटो की पूजा होगी और आरतियाँ होंगी और जगह-जगह सीमंधर स्वामी के मंदिर बनेंगे तब दुनिया का नक्शा कुछ और ही होगा!

हितकारी, वर्तमान तीर्थंकर ही

अभी मेरे हाथों तो बहुत काम होना है! ऐसा कुछ होगा तो इन लोगों का कल्याण होगा, निमित्त चाहिए। अत: यह सीमंधर स्वामी का संकेत अवश्य फल वाला है। अत: लोगों ने ज्ञान नहीं लिया होगा न, और वहाँ सीमंधर स्वामी के दर्शन करेंगे न, तब भी उसका फल मिलेगा, इसीलिए यह सब बना रहे हैं, वर्ना हमें कहीं यह सब होता होगा? हमें यह सब शोभा नहीं देता। और ये तो जीवंत तीर्थंकर हैं, इसलिए

बात कर रहे हैं। यहाँ पर आप जितना सीमंधर स्वामी का करोगे, उतने में आपका सब आ जाएगा। सीमंधर स्वामी की भजना करेंगे तो हिन्दुस्तान में बदलाव आएगा, वर्ना बदलाव कैसे आएगा?

उनके निमित्त से पूरे वर्ल्ड का कल्याण होगा। क्योंकि वे जीवित हैं। उन्हें केवल करुणा, निरंतर करुणा ही रहती है। जो अभी नहीं है, वे कुछ कर नहीं सकते। केवल पुण्य बंधता है।

मेरा 'आइडिया' (भाव) ऐसा है कि पूरे जगत् में 'इस विज्ञान' की बात कोने-कोने तक पहुँचानी है और हर एक जगह पर शांति होनी ही चाहिए। मेरी भावना, मेरी इच्छा जो भी कहो वह मेरा सबकुछ यही है!

जीवित मूर्ति फल देती है

महाविदेह क्षेत्र में सीमंधर स्वामी भगवान विराजमान हैं। तो यहाँ (मंदिर में) उनकी मूर्ति स्थापित करनी है, जीवित की मूर्ति होनी चाहिए! कितना अधिक फल देगी? सीमंधर स्वामी का मंदिर, वह मूर्ति का मंदिर नहीं है, वह अमूर्त का मंदिर है। उनका चित्रपट या मूर्ति सारा काम करेगी। इसलिए अपने महात्माओं को वहाँ दर्शन करते ही रहना है। सामने बैठे रहना है, आप सीमंधर स्वामी के पास बैठे रहो, उस मूर्ति के पास बैठे रहोगे न, तब भी हेल्प होगी।

मैं भी बैठा रहता हूँ न! मुझे तो मोक्ष मिल गया है, फिर भी मैं बैठा हूँ न। वर्ना, मुझे उनका क्या काम था? क्योंकि अभी भी वे *ऊपरी* (मालिक) हैं। उनके दर्शन करते हैं, वे दर्शन किसके? मोक्ष स्वरूप के। देह सहित जिनका स्वरूप मोक्ष है। उनके दर्शन करेंगे तब मोक्ष होगा, वर्ना मोक्ष नहीं होगा।

स्वामी द्वारा होगा पूरी दुनिया का कल्याण

जिस रास्ते हम चले हैं, वही रास्ता आपको बता दिया है। (जीव) सभी जन्मों में भटक-भटककर आया है, कहीं भी सच्चा सुख नहीं मिला है। वहाँ अहंकार की गर्जनाएँ और विलाप ही किया है। छूटने की इच्छा तो है, लेकिन मार्ग नहीं मिल पाता। मार्ग मिलना अति-अति दुर्लभ है। यह 'ज्ञानी पुरुष' का संयोग मिलना ही मुश्किल है। सभी संयोग इकट्ठे होकर बिखर जाने वाले हैं, लेकिन ज्ञानी पुरुष के संयोग से 'सदा की ठंडक' प्राप्त होती है। अब तो काम निकाल लेना है। ज्ञानी पुरुष के पास पड़े रहना है, ऐसी भावना से पराक्रम उत्पन्न होता है। उसके बाद चाहे कैसे भी संयोग आएँ, फिर भी पराक्रम से पार उतरा जा सकता है। जो *गुंठाणां* (गुणस्थानक) हमारे अंदर प्रकट हुआ है, वह *गुंठाणां* आपका भी हो गया है!

हमें मोक्ष में जाना है वहाँ पर। मोक्ष में जा सकें, उतना पुण्य चाहिए। यह अनंत जन्मों का नुकसान खत्म करना है और एक ही जन्म में करना है। इसलिए वास्तव में तो मेरे पीछे पड़ जाना चाहिए, लेकिन वह तो आपके बस में नहीं है। ये सीमंधर स्वामी के साथ तार जुड़वा देता हूँ, क्योंकि वहाँ जाना है। अभी एक जन्म बाकी रहेगा। यहाँ से सीधा मोक्ष नहीं होगा। उनके पास बैठना है इसलिए संधान (जोड़) करवा देता हूँ और ये भगवान पूरे वर्ल्ड का कल्याण करेंगे! यानी उनके निमित्त से पूरे वर्ल्ड का कल्याण होगा!

- जय सच्चिदानंद

अक्रम विज्ञान की बलिहारी

विज्ञान किसे कहते हैं? जो सिद्धांत रूपी हो। सिद्धांत अर्थात् जो विरोधाभासी न हो। और, नकद फल मिलना चाहिए, उधार नहीं चलेगा। इतना किया तो फिर अगले दिन उसका फल मिलना ही चाहिए। अभी आप मेरे साथ यहाँ पर बैठे हो, उसका भी नकद फल मिलेगा। यहाँ पर जो भी करते हो, उन सब का नकद फल मिलेगा, उधार नाम मात्र को भी नहीं, उसे कहते हैं विज्ञान। अब यहाँ पर आप एक चक्कर लगाते हो तो आपको नकद फल मिले बगैर रहेगा नहीं। यह तो विज्ञान है, आप जहाँ से पकड़ोगे वहाँ से मेल बैठेगा।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्राप्ति के बाद पुण्यशाली ही रहेगा न?

दादाश्री : आत्मज्ञान प्राप्त करना तो कभी होता ही नहीं है। पहली बार ऐसा ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। अक्रम विज्ञान है ही ऐसा। यह तो विज्ञान है इसलिए ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। क्रमिक मार्ग में तो रिलेटिव ज्ञान है और यह अक्रम विज्ञान तो क्रियाकारी ज्ञान है। आप बैठे हुए हों, तब भी वह अंदर क्रिया करता ही रहता है। नहीं करता?

प्रश्नकर्ता : करता है।

दादाश्री : सावधान करता है या नहीं करता?

प्रश्नकर्ता : करता है।

दादाश्री : यह तो क्रियाकारी ज्ञान है। यह तो अक्रम विज्ञान है और यह निमित्त ही अलग प्रकार का है। बहुत बदलाव आ गया है, वह सब देखो न! ये सारे बदलाव आए हैं न?

प्रश्नकर्ता : दादा की दुआ से अंतिम घड़ी वालों में भी बल आ जाता है। यानी कि अच्छा परिवर्तन हो जाता है। ऐसा किस कारण से?

दादाश्री : हाँ। सब बदल जाता है। यह विज्ञान ही ऐसा है। विज्ञान का बल ऐसा है। सभी अंधकार में ठोकरें खाते-खाते चल रहे थे और किसी ने टॉर्च लाइट की तो सभी को ठोकर लगनी बंद हो गई। ऐसा है यह विज्ञान। और लालटेन दिखाने से तो किन्हीं दो-तीन लोगों को ही ठोकर नहीं लगती, पर बाकी सब को लगती है।

प्रश्नकर्ता : आपने ये जो आज्ञाएँ दी हैं, यह जो जागृति करवाई है, उसमें ब्रह्मांड के भाव समाए हुए हैं। अब उससे आगे कुछ भी कहने को नहीं रहता।

दादाश्री : तमाम शास्त्र, सभी आगम, इसमें आ गए। चौबीस तीर्थंकरों का पूरा विज्ञान है यह!

प्रश्नकर्ता : हमें दिल में जो महसूस हुआ, वह आपको बता दिया साहब!

दादाश्री : जिनके माध्यम से आपने पटंतर (जब अज्ञान से मुक्ति पाकर जीव आत्मज्ञान प्राप्त करता है, वह स्थिति) पाया है, उन्हें सर्वस्व समर्पण करने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाना चाहिए। सर्वस्व अर्पण कर देना, कहते हैं। जिनके द्वारा आपने पटंतर प्राप्त किया है। क्या थे और क्या हो गए! पटंतर को जात्यांतर कहा जाता है।

हम जो पाँच आज्ञा देते हैं न, आप जितना उन पाँच आज्ञाओं का पालन करोगे, उतना लाभ होगा। कम पालोगे तो ज़रा कम लाभ रहेगा। लेकिन क्रोध-मान-माया-लोभ तो चले ही जाते हैं। कमज़ोरियाँ चली जाती हैं। यह तो ऐसा है न, कि यह जो ज्ञान प्राप्त हुआ है न, तो पाँच अरब रुपये देने पर भी ऐसा ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। पाँच लाख जन्मों में भी नहीं हो सकता, ऐसा एक घंटे में हो जाता है। इस पर टाइम बिगाड़ने जैसा नहीं है। यह विवरण करने जैसी चीज़ नहीं है। दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन। कैश बैंक में ऐसा नहीं कह सकते कि आपका चेक कितने बजे आएगा और कितने बजे मुझे पेमेन्ट मिलेगा, ऐसा-वैसा कुछ भी नहीं कह सकते। यह समझ में आ रहा है न? और कैश बैंक कहने पर आप समझ जाओगे या नहीं समझोगे? क्या लगता है आपको?

यहाँ ज्ञान लेने से पहले भी कोई ज्ञान निरंतर काम कर रहा था लेकिन वह ज्ञान अधोगति में ले जाने वाला ज्ञान था और यह ज्ञान भी निरंतर काम ही करता रहता है और यह मोक्ष में ले जाएगा। इसे भगवान ने समकित कहा है।

यहाँ पर ज्ञान लेने के बाद में वह उग निकलता है। अगले दिन ही दूज के चंद्रमा जैसा प्रकाश दिखाई देता है लेकिन फिर उस पर पानी छिड़कना पड़ता है। अगर सत्संग में नहीं आओगे तो यों ही कुछ नहीं हो पाएगा। किसी दूसरे शहर में रहते हों फिर भी ठीक से पानी छिड़कवा लोगे तो पेड़ बड़ा होगा। उसके बाद हमेशा के लिए शांति हो जाएगी!

अनादि की अमावस्या थी न, उसके बजाय दूज तो हुई। दूज का चंद्रमा दिखाई दिया। अब धीरे-धीरे तीज होगी, चौथ होगी। हमारे कहे अनुसार अगर हमारी आज्ञा में रहोगे तो यह सब बढ़ता जाएगा और पूनम होने पर सब संपूर्ण हो जाता है। 'यह' मूल वस्तु प्राप्त हो गई और अंदर आनंद उत्पन्न हुआ है। अब धीरे-धीरे जिस प्रकार दूज का चंद्रमा उगता है और उसमें से पूनम होती है, पूनम और दूज में फर्क तो है न? ये सारे फेज़ेज़ बदलते रहते हैं। फेज़ेज़ ऑफ द मून। उसी प्रकार इस ज्ञान के फेज़ेज़ हैं। पूनम हो गई तो सबकुछ जानना पूरा हो गया।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** (079) 27540408, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

मुंबई : पूज्य नीरूमा का 78वाँ जन्मदिन : ता. 2 दिसम्बर

केक कटिंग

प्रसाद अर्पण

सत्संग

मुंबई : सत्संग-ज्ञानविधि : ता. 1 से 5 दिसम्बर

सत्संग

पुणे : निष्पक्षपाती त्रिमंदिर का भूमि पूजन-सत्संग-ज्ञानविधि : ता. 9 से 12 दिसम्बर

पूजन

भूमि पूजन

पुणे त्रिमंदिर का स्थान

सत्संग

ज्ञानविधि

जनवरी 2022
वर्ष-17 अंक-3
अखंड क्रमांक - 195

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

ये मंदिर नहीं है लेकिन कल्याण का धाम है

इन मंदिरों के लिए ऐसी संज्ञा हुई, इसलिए बने हैं। हमारी यह संज्ञा जगत् कल्याण के लिए है। यह सीमंधर स्वामी का मंदिर बन जाए तो अच्छा है। लोगों के हित के लिए है। यहाँ जितने लोग सीमंधर स्वामी के दर्शन करेंगे न, उतना ही अधिक फलदायी हो जाएगा। क्योंकि ये हाज़िर तीर्थंकर कहलाते हैं, बहुत हेल्पफुल हैं! महाविदेह क्षेत्र में सीमंधर स्वामी भगवान विराजमान हैं। तो यहाँ उनकी मूर्ति स्थापित करनी है। जीवंत की मूर्ति हो तो वह कितना अधिक फल देगी! इस मंदिर (त्रिमंदिर) का संकुल तो मतार्थ मिटाने के लिए है। सारे मतभेद चले जाएँगे और लोगों को फल देगा।

– दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.